रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - रंगमोहल से पात धाट

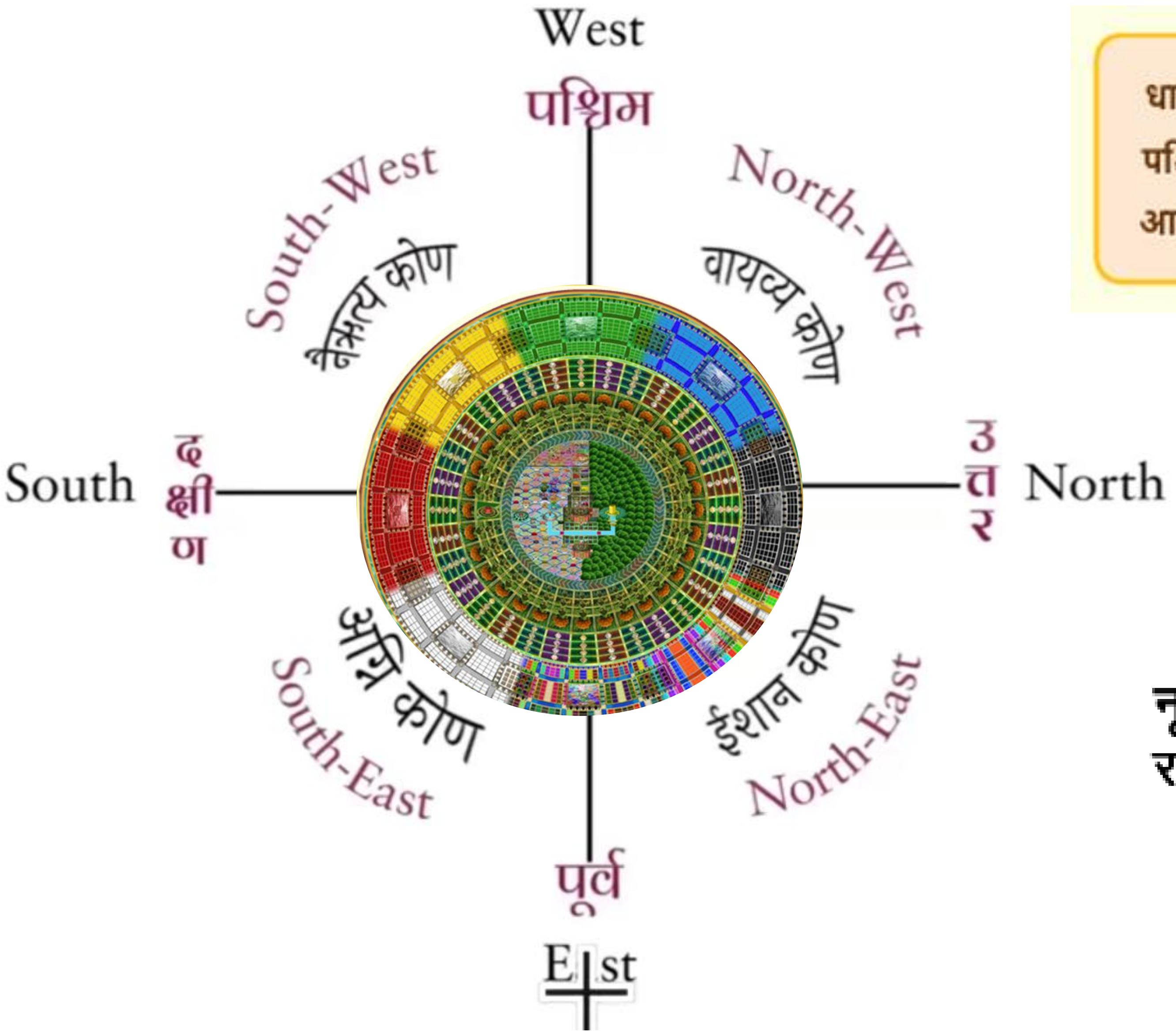

धाम तालाब कुंजवन सोहे, मानिक नेहरें वन की जोहे।
पश्चिम चौगान बड़ोवन कहिए, पुखराजी जमुना जी लहिए।
आठों सागर आठ जिमी ये, पच्चीस पक्ष हैं धाम धनी के।।

नूर नीर खीर दधि सागर , घृत मधु इक ठौर ।
रस सर्वरस सागर , बिन मोमिन ना पावे और ।।

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - रंगमोहल से पात धाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

चांदनी चोक

सात घाट - मधू वन & महा वन

रोंस: पुखरजी, वन , जल

पाल

जमुनजी

पात घाट

केल पुल

बट पुल

देहूरिया

बट धाट

कुंज निकुंज वन

अक्षरधाम

सर्वरस सागर

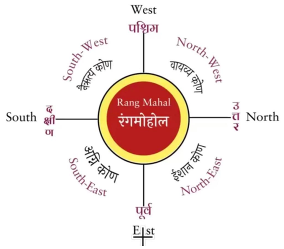

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - रंगमोहल से पात धाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

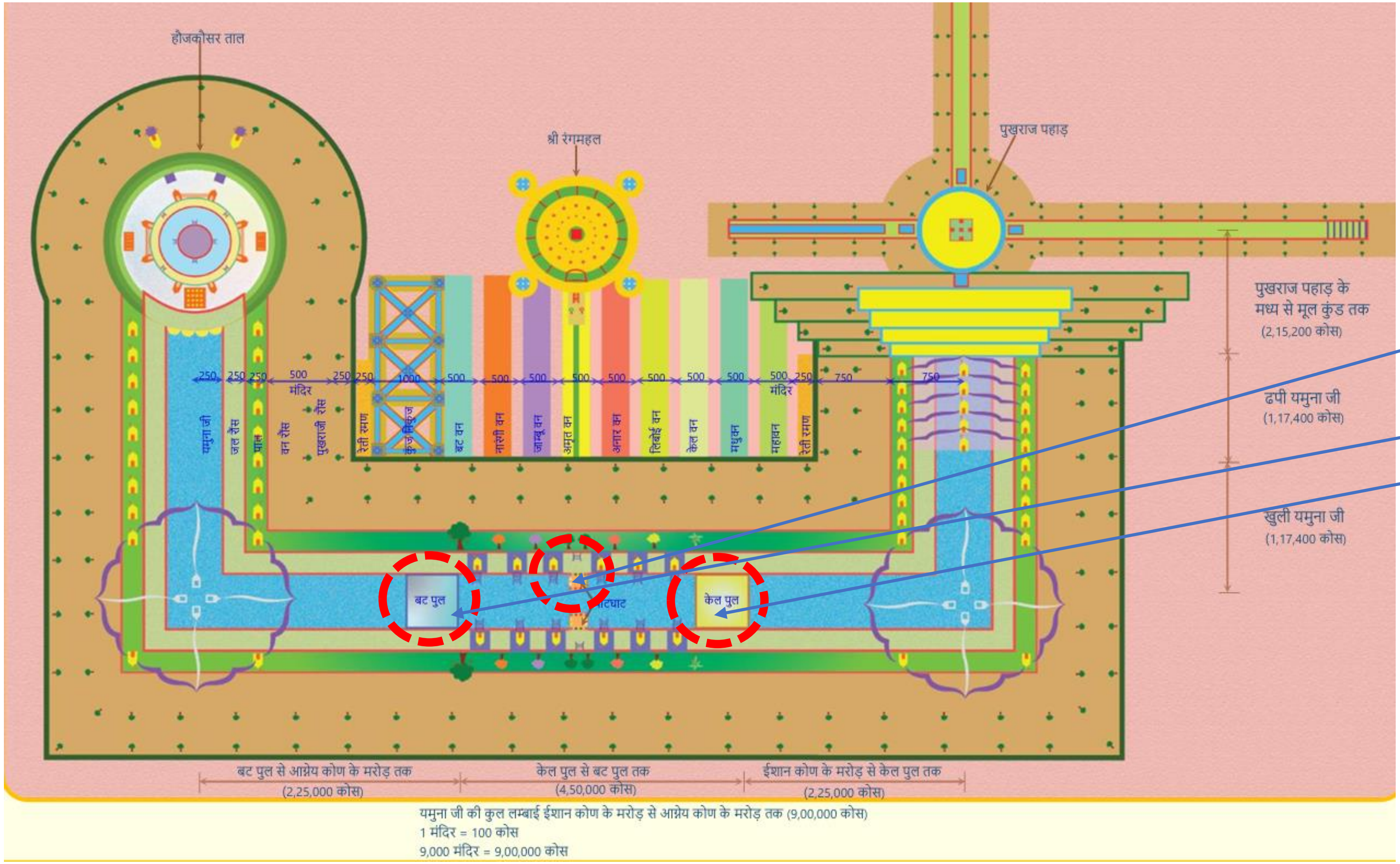

परमधाम विहार – पूर्व

सुखपाल , तख्तरवा, सेर करते

क्रष्ण पक्ष (वद)	
एकम	पात धाट
बीज	बट पुल
अमास	केल पुल

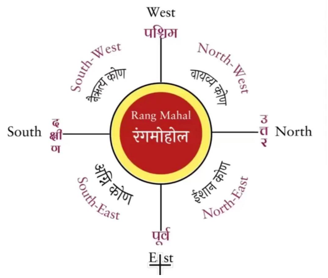

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - रंगमोहल से पात धाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

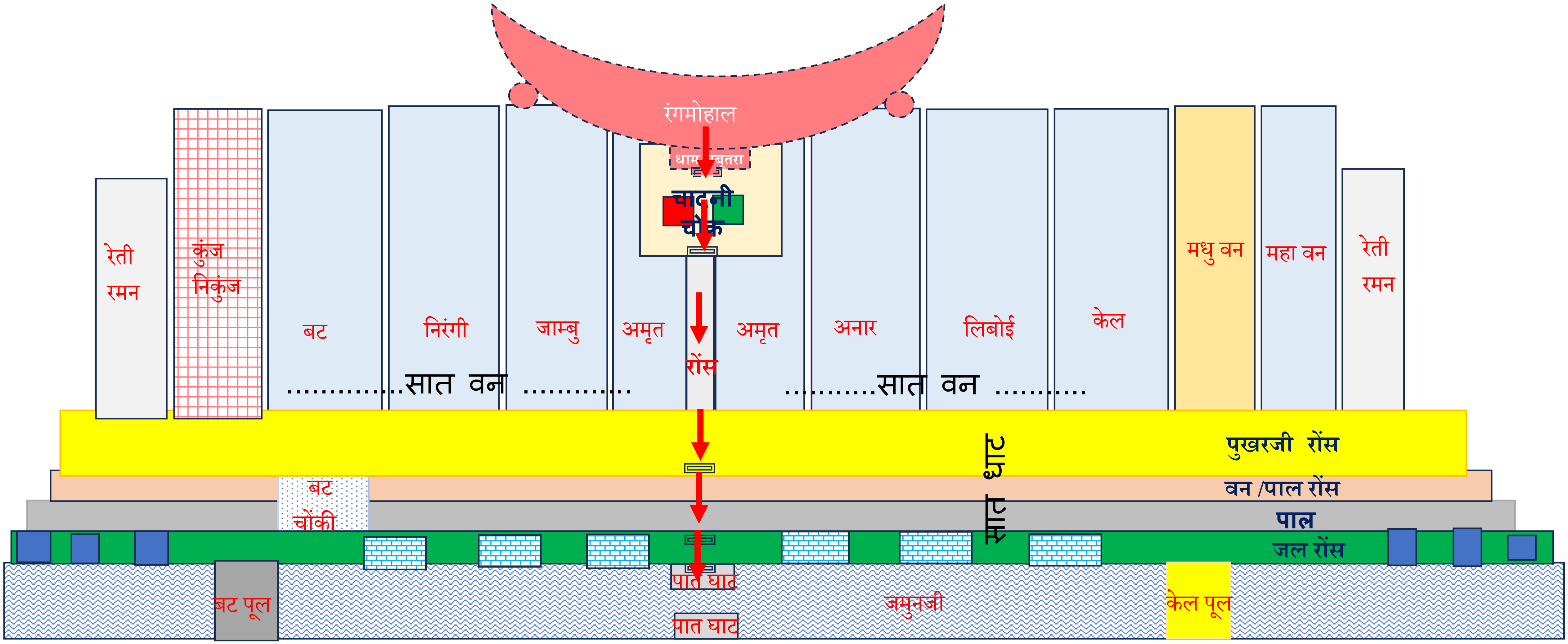

मारा वाला जी चलो, जमुना जल झीलिये।।टेक।।
पाट घांट की देहुरि में, जहां रामत कीजे राज।

रोंस:

पुखरजी रोंस

वन रोंस,

पाल

जल रोंस

बड़ों वन के वृक्ष

देहूरी

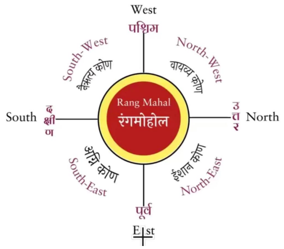

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - रोंस

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

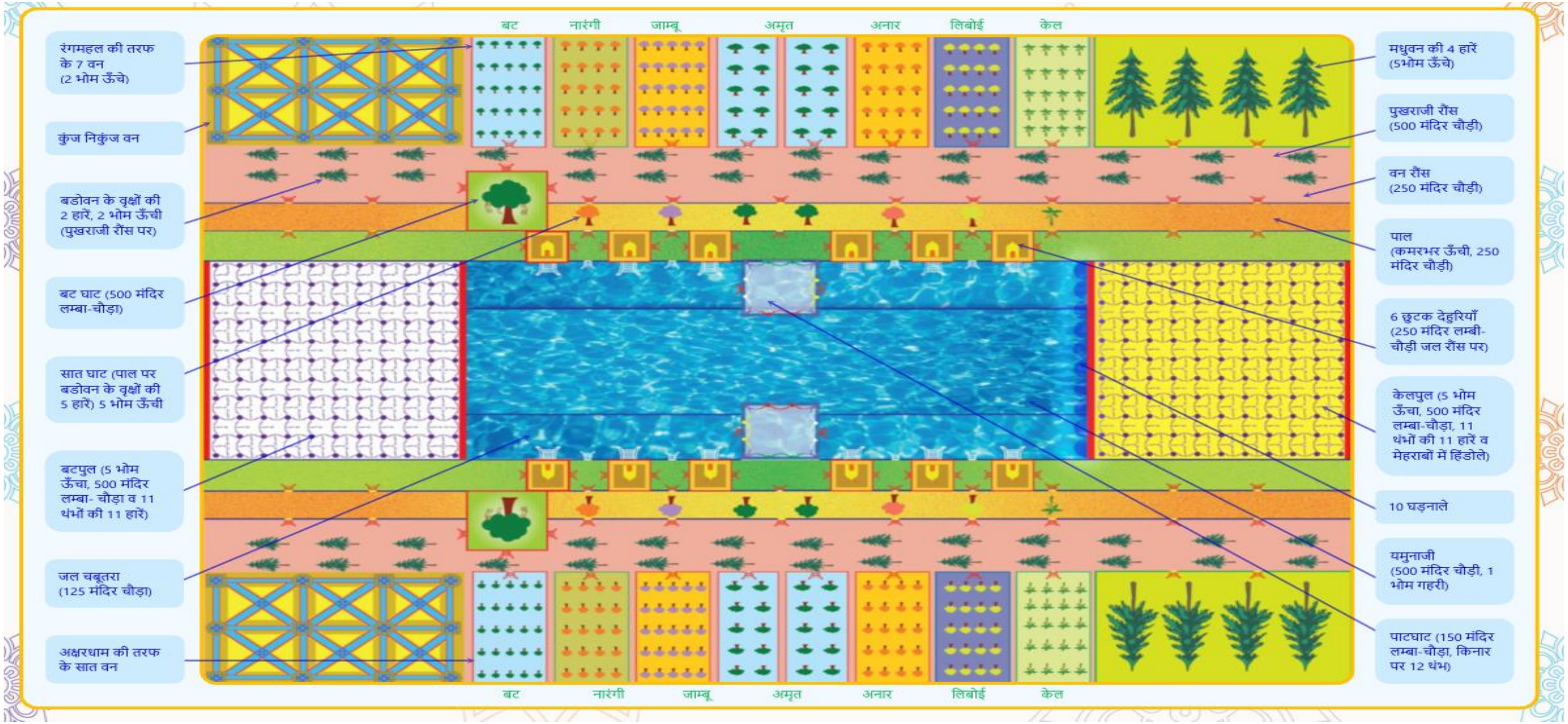

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - पुखरजी रोंस

पुखराज रोंस की शोभा जमुनजी के घाट पर

बड़ों वन के वृक्ष

बड़ोवन के वृक्ष - 2 वृक्ष हार (50 मंदिर नी दूरी पर)
2 भोम , 3rd चदानी

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – पाल रोंस

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

पाल की शोभा
जमुनजी के घाट पर

बड़ों वन के वृक्ष
5 भोम 6th चादनी

सात वन - पाल वृक्ष
2 भोम , 2 मंदिर दूरी पर

केल वन सामे केल ना वृक्ष......
लिम्बोई वन सामे लिम्बोई ना वृक्ष......
अनार वन सामे अनार ना वृक्ष......
अमृत वन सामे अमृत ना वृक्ष......
जाम्बु वन सामे जाम्बु ना वृक्ष......
नारंगी वन सामे नारंगी ना वृक्ष......

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – पाल रोंस

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

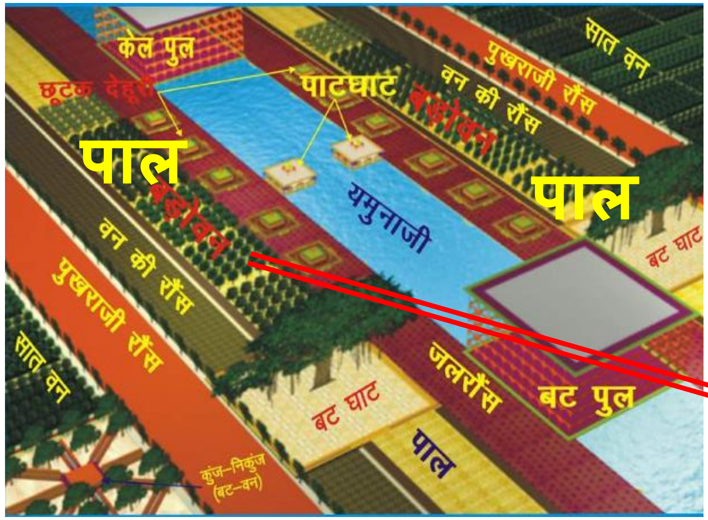

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – पाल रोंस

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

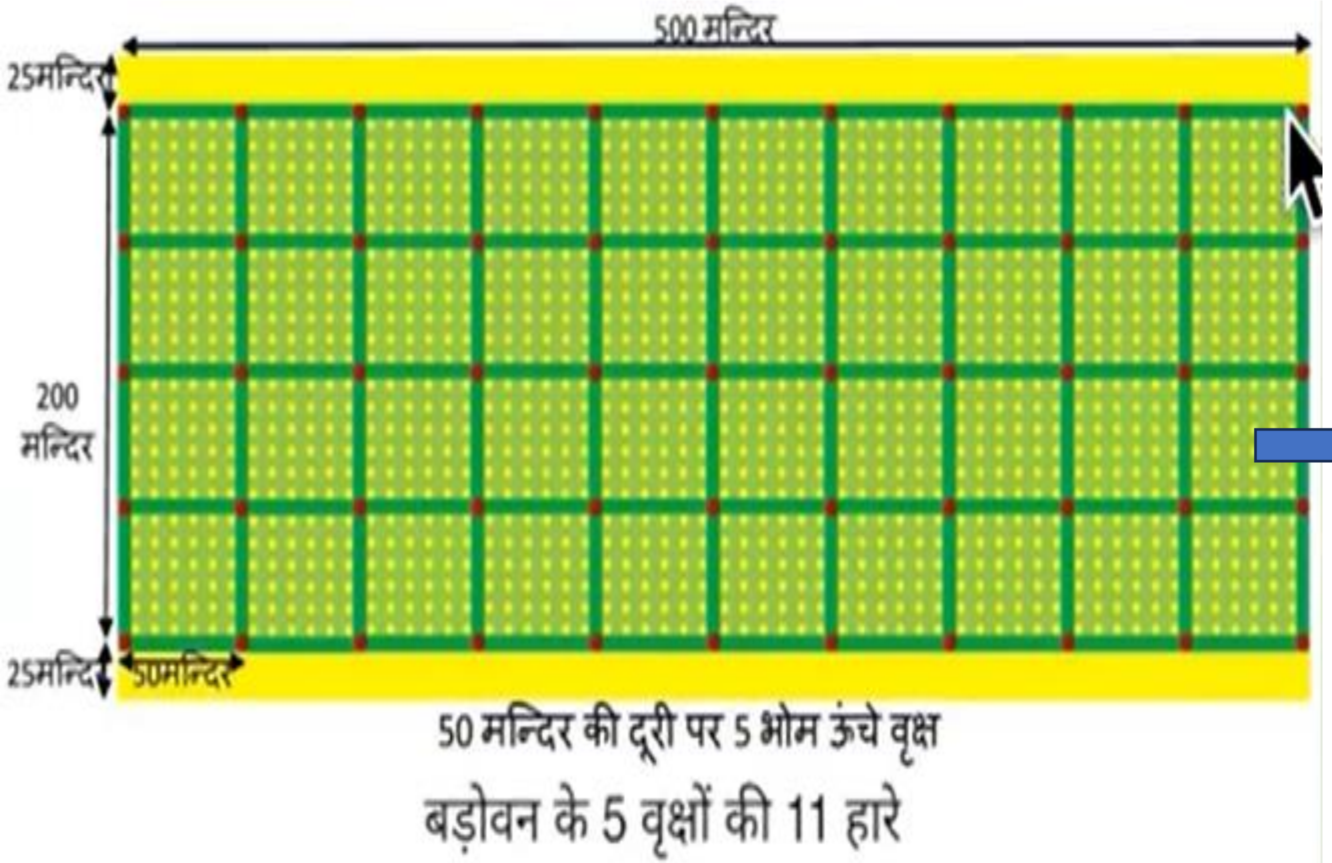

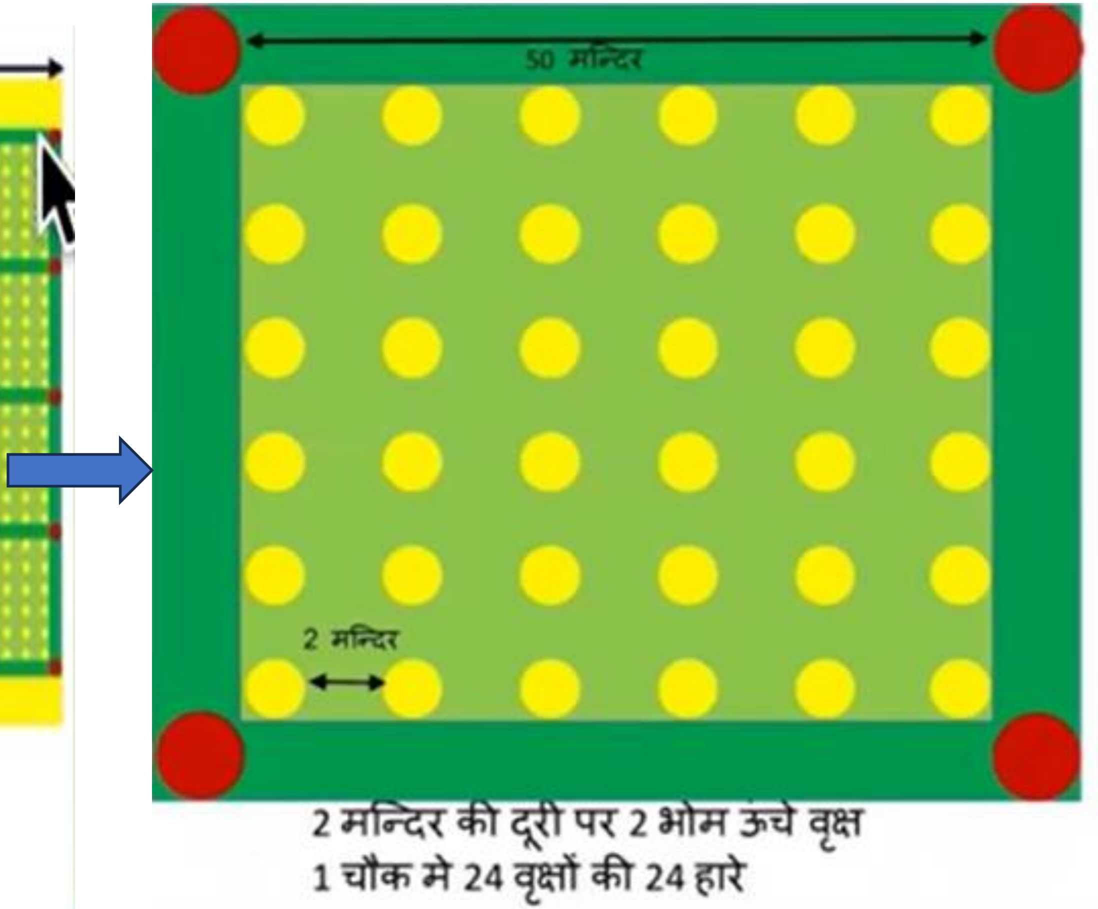

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – पाल रोंस

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

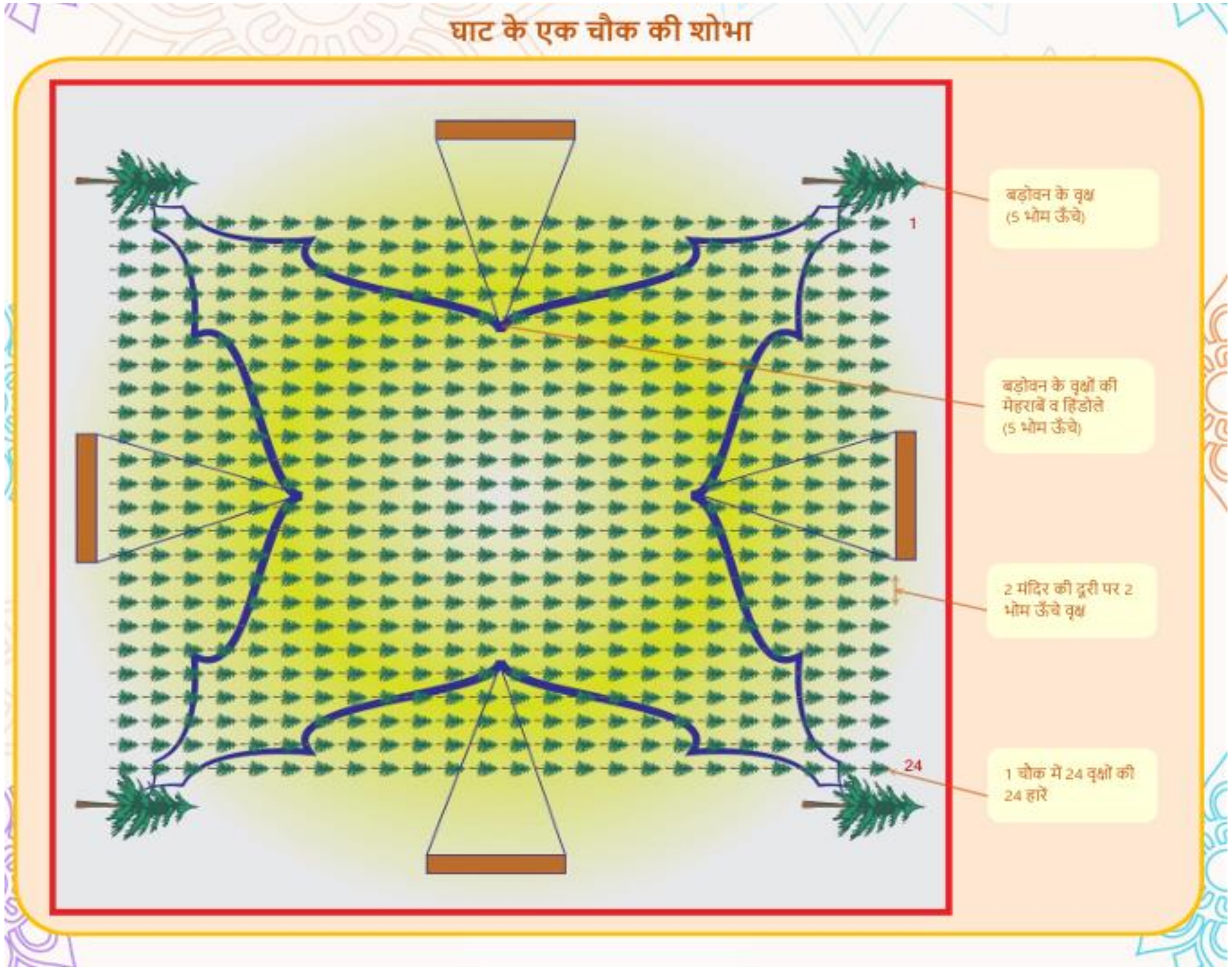

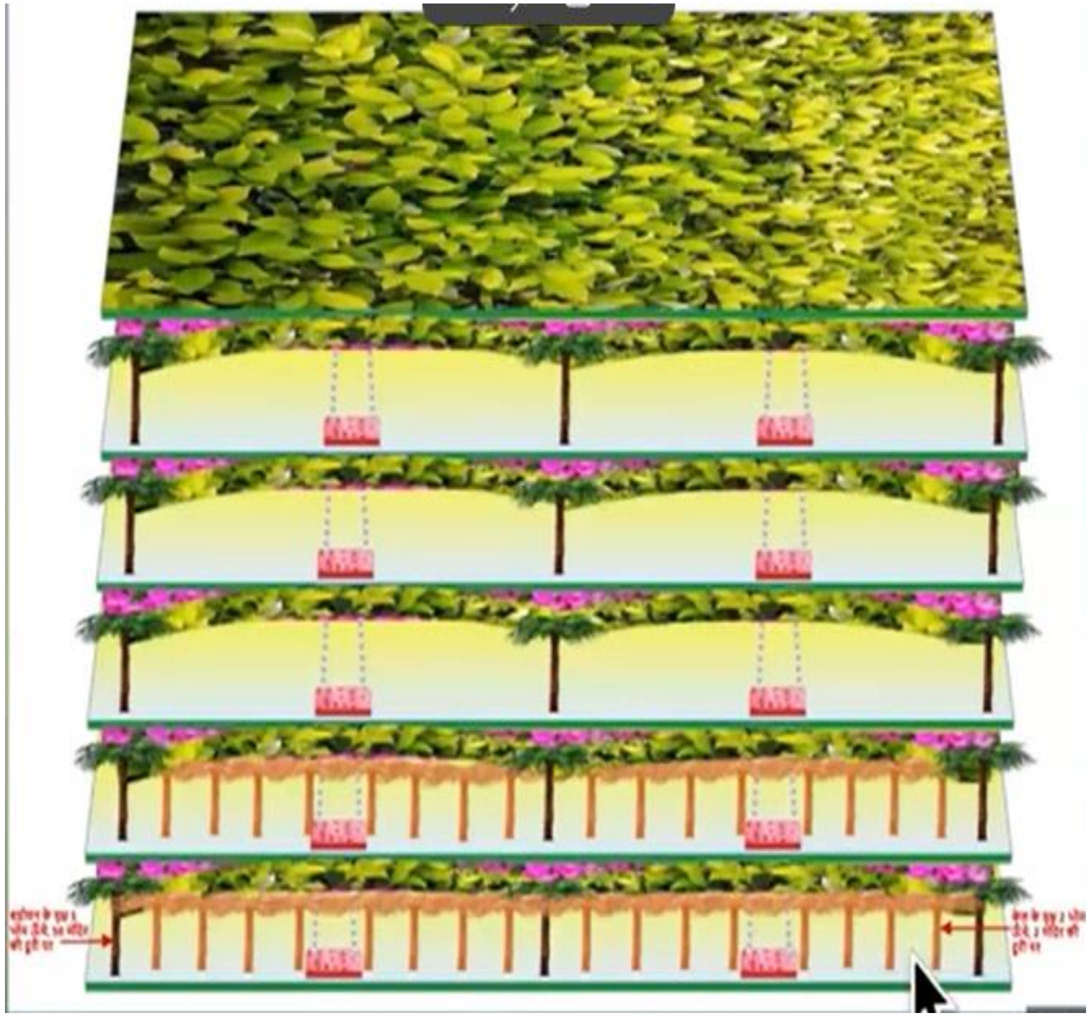

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – जल रोंस

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

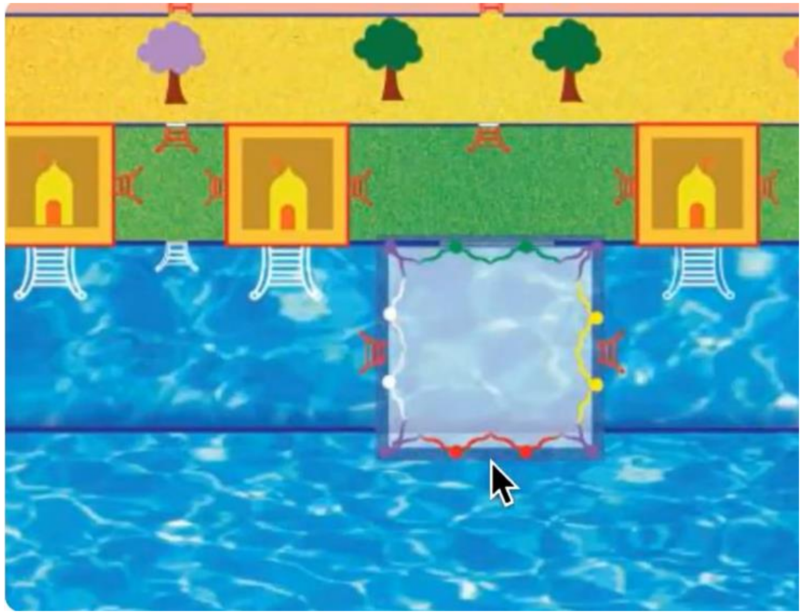

जल रोंस की शोभा जमुनजी के घाट पर

6 देहूरी

छुटक छुटक देहुरी , सातों घाटो माहें।
दोऊ किनारे जड़ाव ज्यों , क्यों कहूँ शोभा जुबाएँ।।

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – जल रोंस देहूरी

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

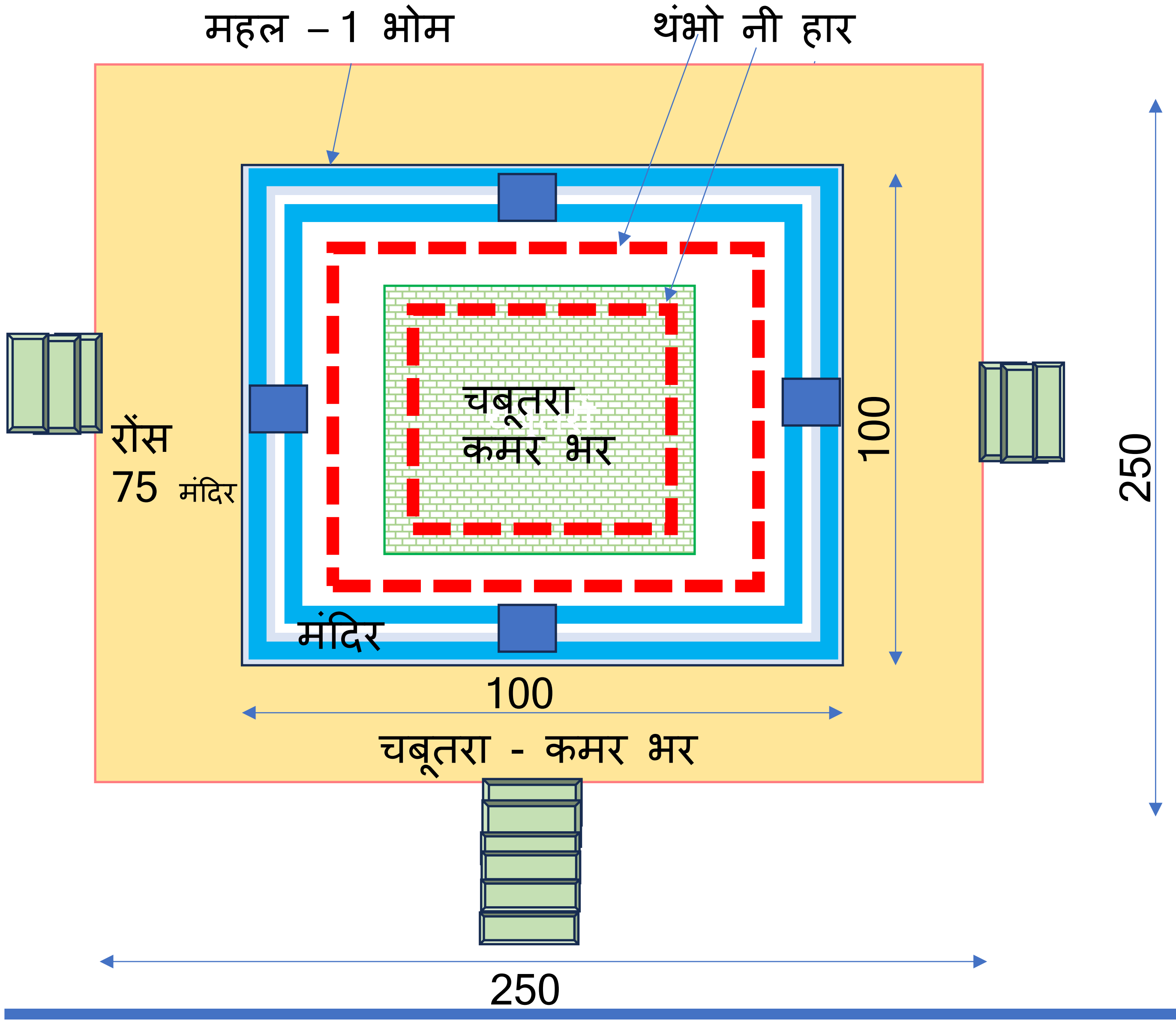

छुटक छुटक देहुरी , सातों घाटो माहें।
दोऊ किनारे जड़ाव ज्यों , क्यों कहूँ शोभा जुबाएँ।।

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – जमुनजी

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

जमुनजी

पात घाट

केल पुल

बट पुल

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - जमुनजी

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

तले पुल के आवत , जुदी जुदी नहरों में दोय।
एक पकड़े हाथ दूजी का, रमें राह बीच रेहेत सोय।।

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - जमुनजी

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

सातों घाट बीच में , पुल मोहोल तरफ दोए।
दोऊँ पाँच भोम छठी चाँदनी, क्यों कहूँ शोभा सोए।।

इत जल वाए के चलत जो पुर, सो मैं क्या कहूँ ताको नूर।
जल के जो उठत तरंग, ताकी किरना देखावे कई रंग।।

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - जमुनजी

मूल कुंड से मरोड़ तक की शोभा

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

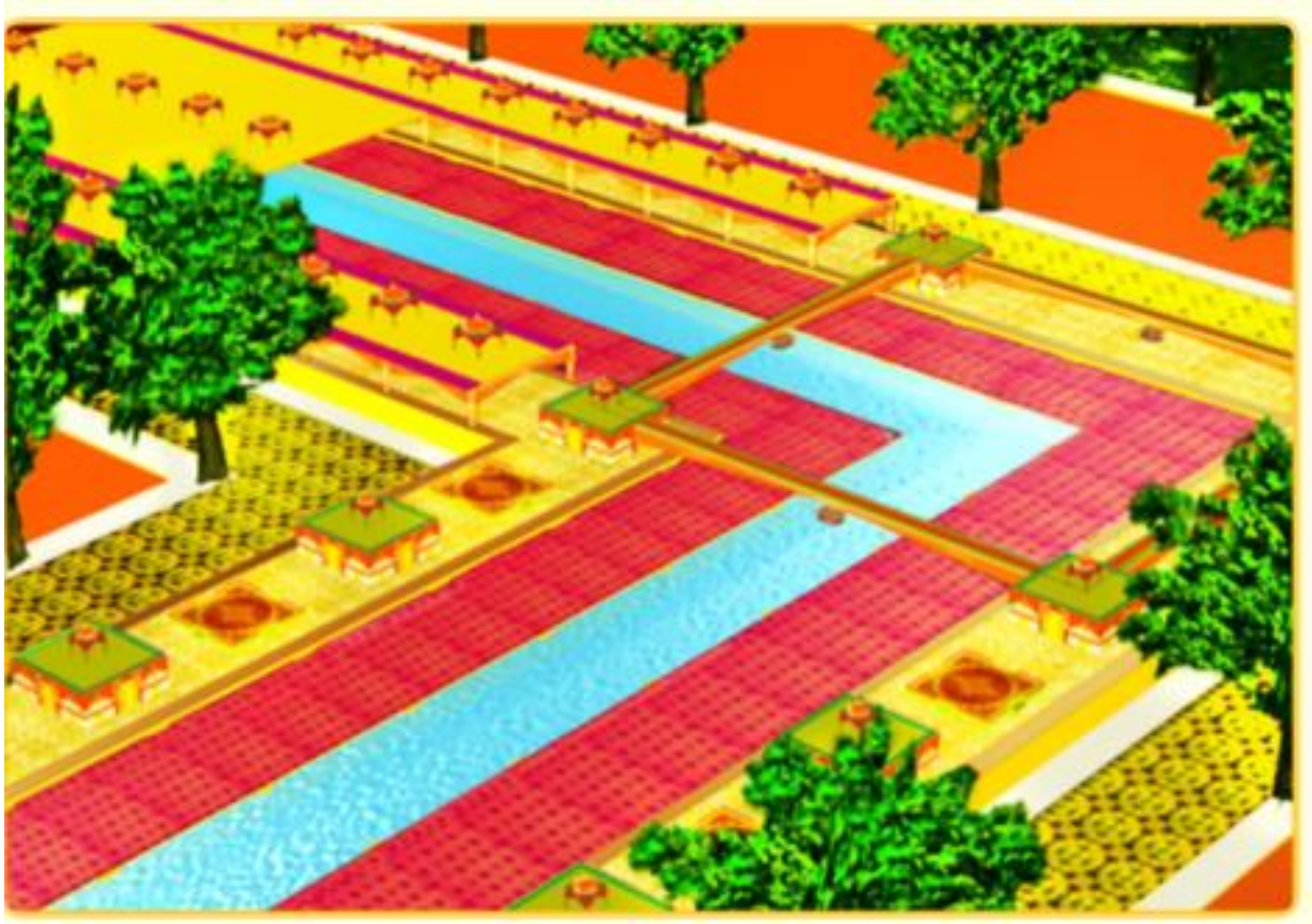

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा –जमुनजी केल पुल

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

सातों घाट बीच में , पुल मोहोल तरफ दोए।
दोऊँ पाँच भोम छठी चाँदनी, क्यों कहूँ शोभा सोए।।

झूलत भांत लेहेरा लेत हैं , सुख की होत झकोर।
क्यूँ कहूँ सुख हिण्डोलन के, जो रूहें लेत ठौर ठौर।।

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – जमुनजी केल पुल

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

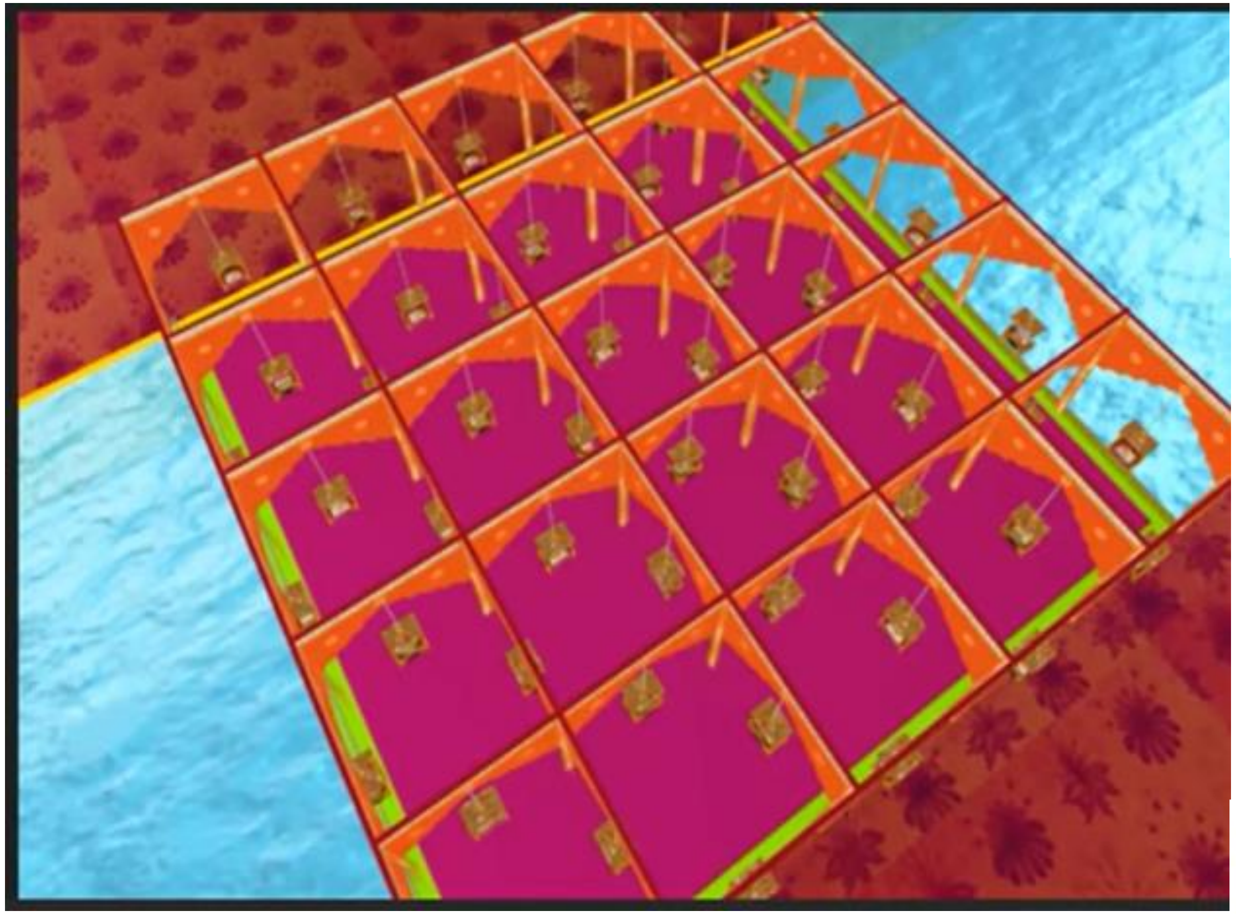

झूलत भांत लेहेरा लेत हैं , सुख की होत झकोर।
क्यूँ कहूँ सुख हिण्डोलन के, जो रूहें लेत ठौर ठौर।।

दोए पुल सात घाट बीच में, पाट घाट बिराजत ।
बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत ॥२०॥
जो घड़नाले पुल तले, दस दस दोऊ के ।
दस नेहेरें चलें दोरी बंध, बड़ी अचरज खूबी ए ॥२१॥

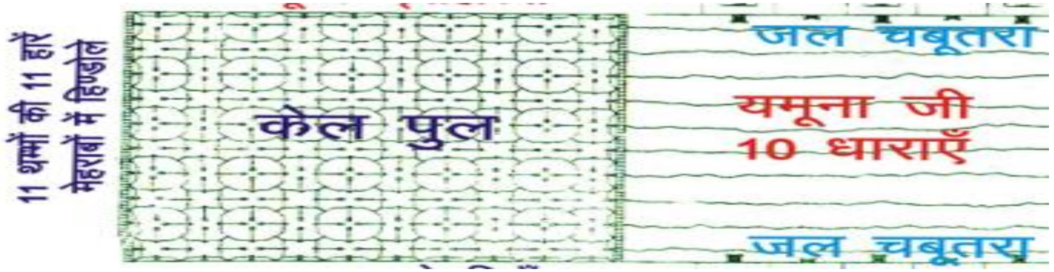

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – पाट घाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

दोए पुल सात घाट बीच में , पात घाट बिराजत |
बीच दोऊ दरबार के, बन अंबर जोत धरत ||

मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर तरफ से चारों द्वार ।
चारों खूंटों थंभ नीलवी, अंबर² भर्‌यो झलकार ॥१९॥

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – पाट घाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

आगूं धाम के बन भला, जमुना जी सातों घाट ।
तीन बाएं तीन दाहिने, बीच जल कठेड़ा पाट ॥१६॥

घाट पाट जल ऊपर, अमृत बन हैं जांहें ।
इन बन की सोभा क्यों कहूं, मेरो सब्द न पोहोंचे तांहें ॥१७॥

झीलन स्यामा संग राज सों, साथें किए जल केलि ।
इन समें के विलास की, क्यों कहूं रंग रेलि ॥१८।

मानिक हीरे पाच पोखरे, नूर तरफ से चारों द्वार ।
चारों खूंटों थंभ नीलवी, अंबर[२] भर्यो झलकार ॥१९॥

ए बारे थंभों चांदनी, सोभित जल ऊपर ।
साथ बैठा सब फिरता, चारों तरफों पसर ॥२०॥

सोभा बन संझा समें, फल फूल खुसबोए ।
साथ बैठा पाट[१] ऊपर, बीच सुंदर सरूप दोए ॥२१॥

बीच बैठक राज स्यामाजी, साथ गिरदवाए घेर ।
साजे सकल सिनगार, सोभा क्यों कहूँ इन बेर ॥२२॥

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा - जमुनजी बट पुल

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

बट पुल से मरोड़ तक की शोभा

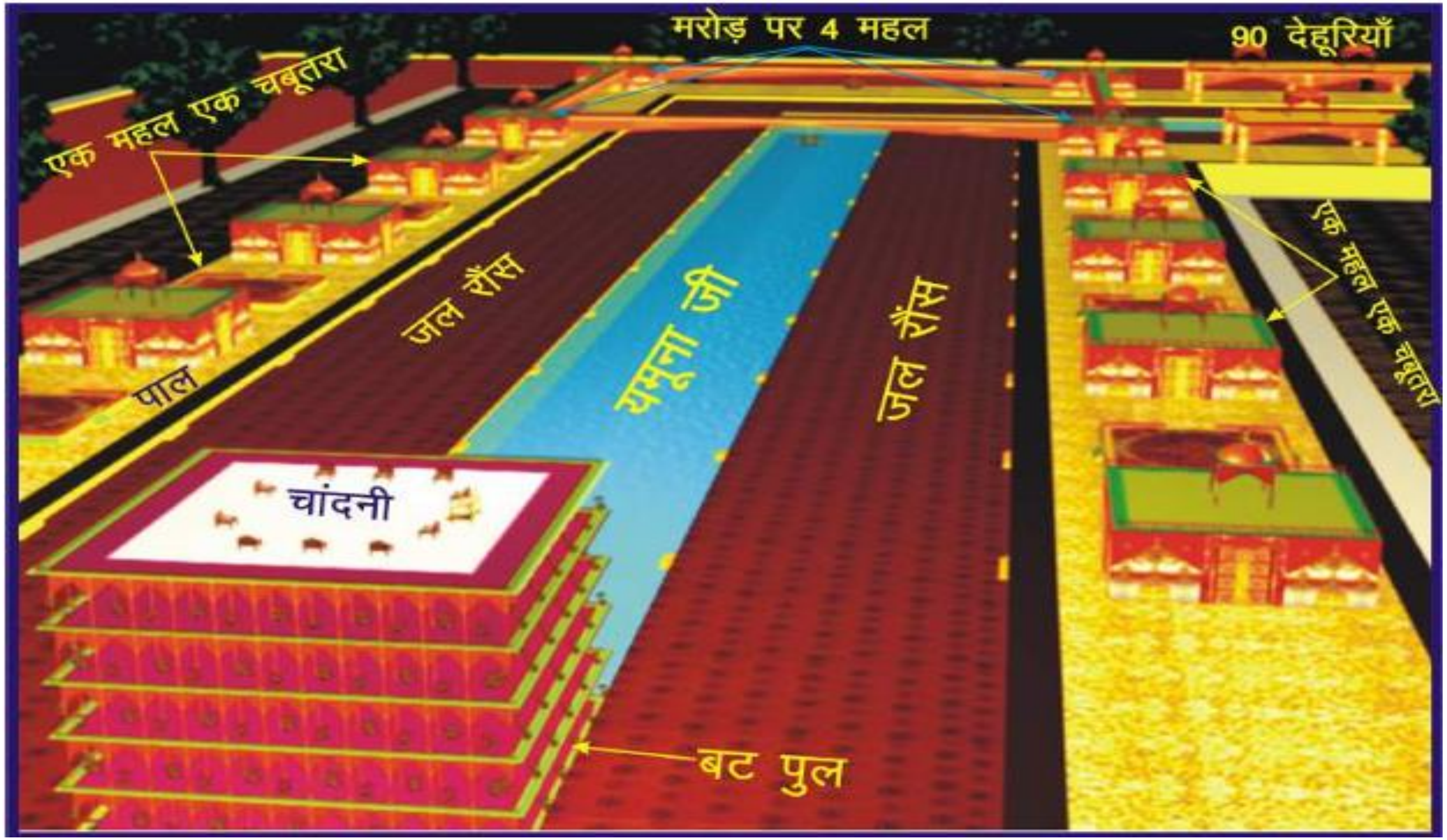

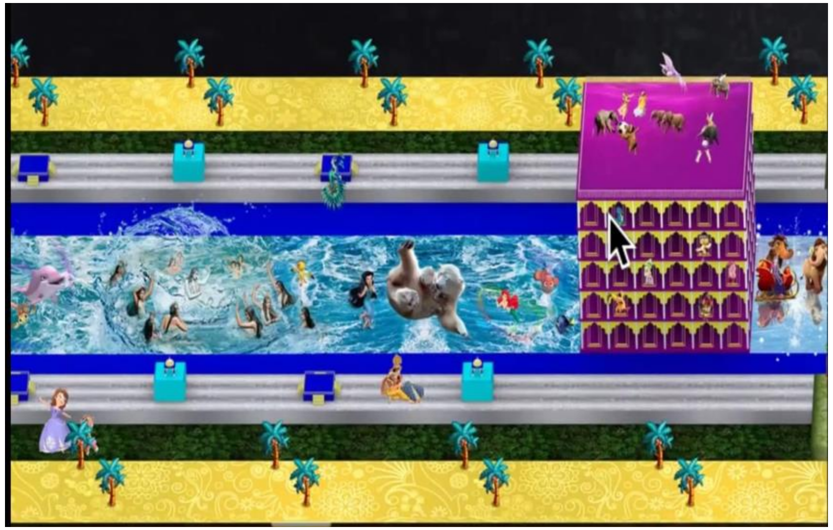

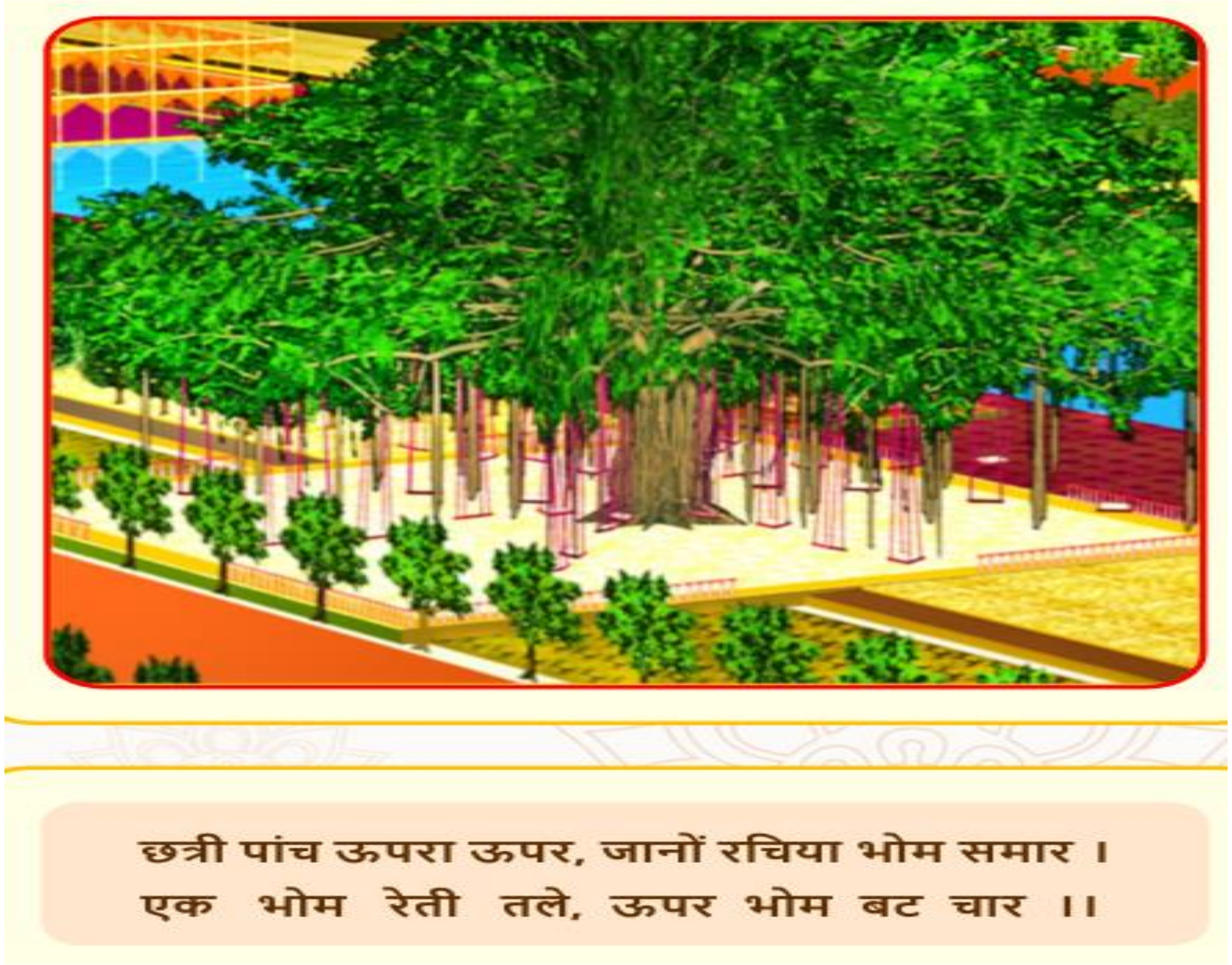

बट घाट

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – बट घाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – बट घाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

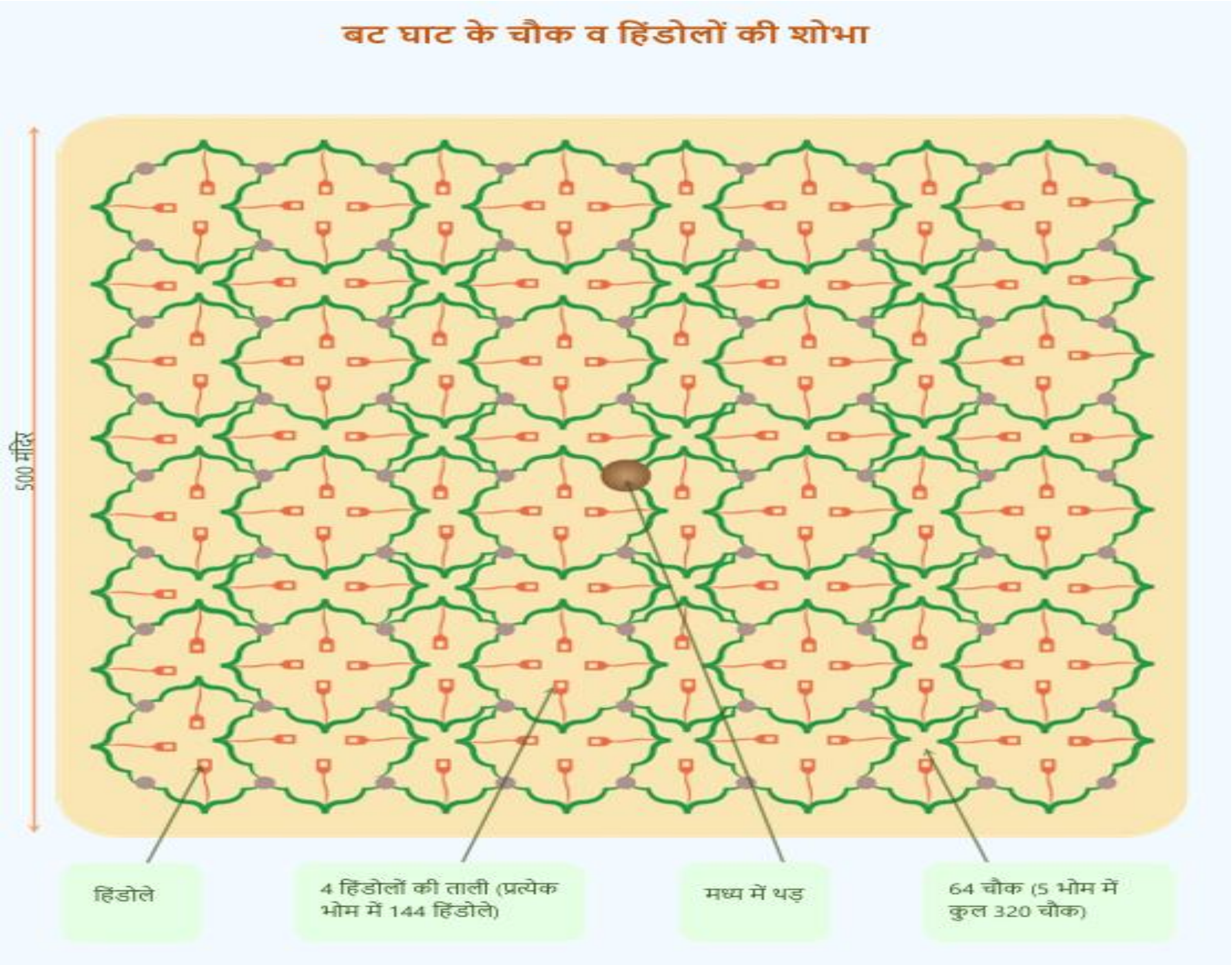

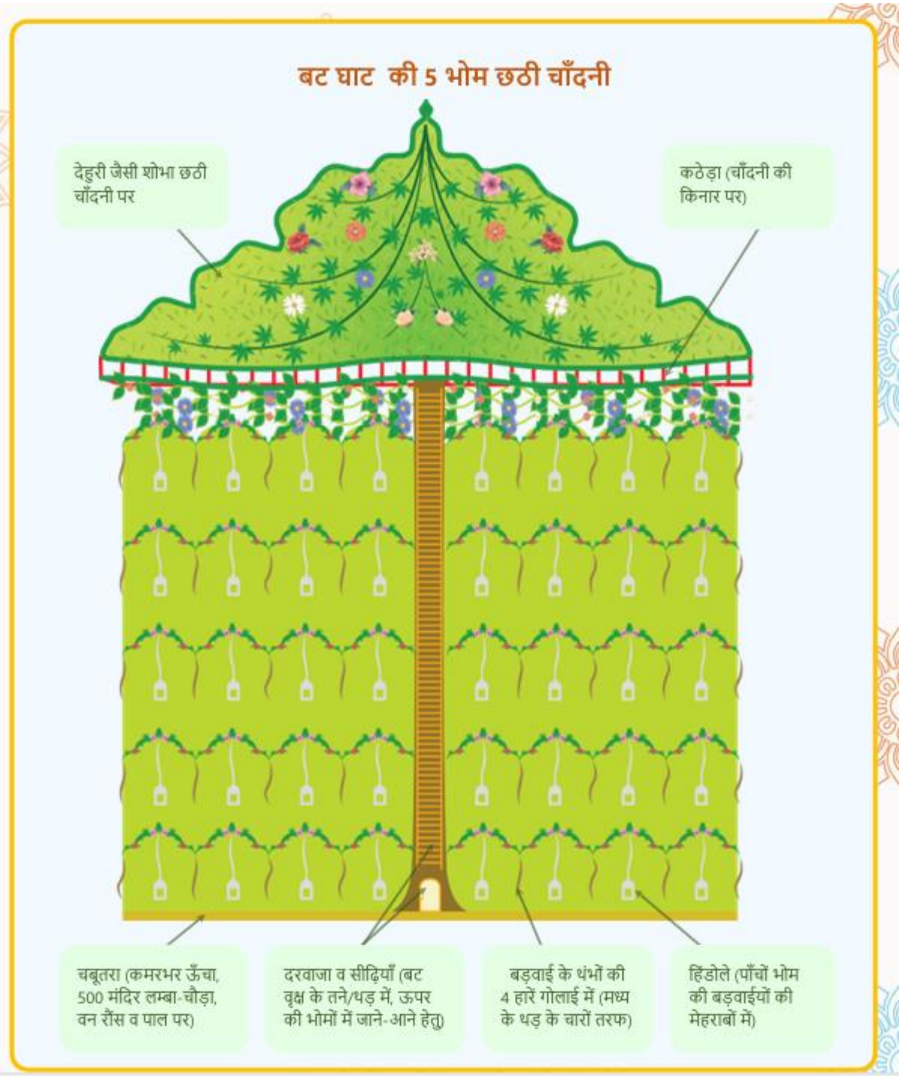

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – बट घाट

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

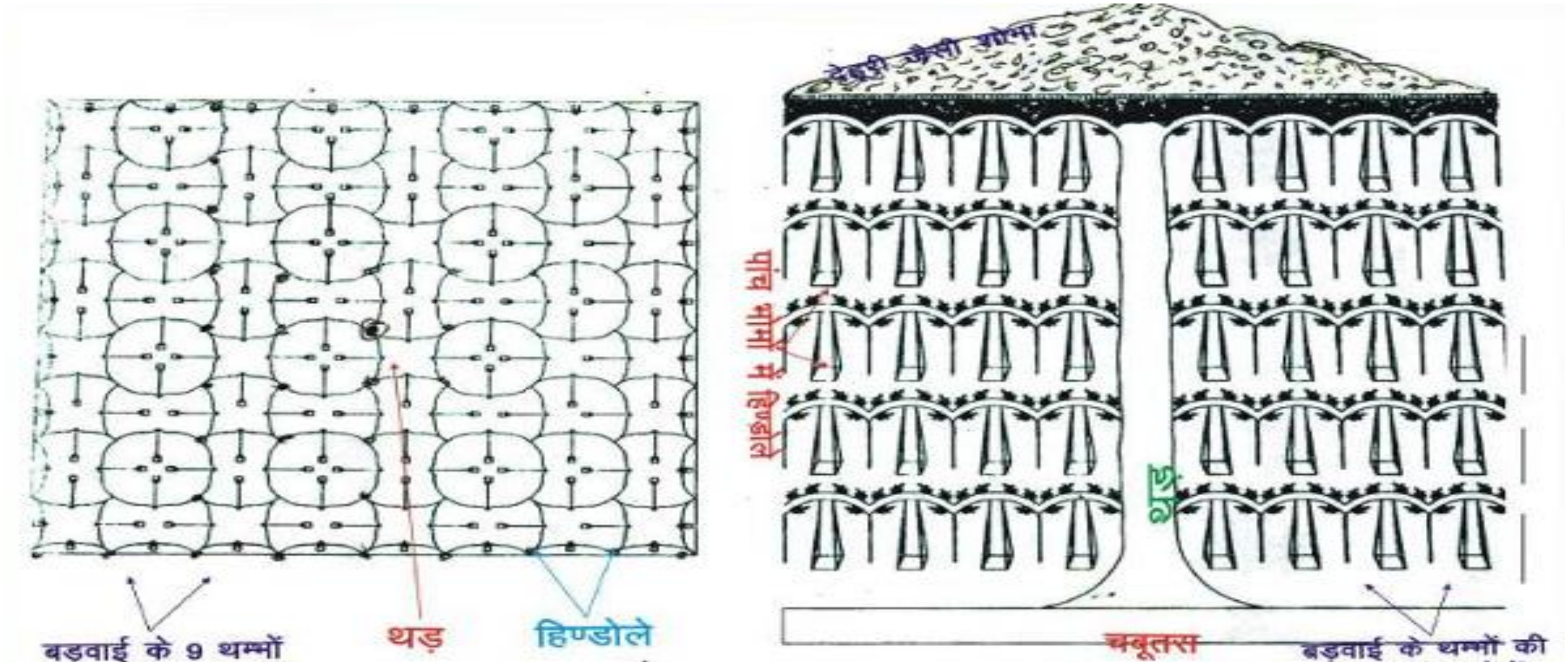

तरफ चारों फिरते हिण्डोले , उपली भोम लग जोए ।
धाम तालाब जमुना नारंगी , सखियाँ हींचत बट पर सोए ।।

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – लीला

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – सात घाट की लीला

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

उतर झरोखों से जाइए, दूजी भोम बन माहें ।
बन सोभे पसु पंखियों, कई हक जस गावें जुबांए ॥११॥
चल जाइए सातों घाट लग, खूबी देख होइए खुसाल ।
कई विध हक जिकर करें, पसु पंखी अपने हाल ॥१२॥
इस्क जुबां बानी गावहीं, खूब सोभित अति नैन ।
मगन होत हक सिफत में, मुख मीठी बानी बैन ॥१३॥
किन बिध कहूं पसु पंखियों, परों पर चित्रामन ।
मुख बोलें हक के हाल में, तिन अंबर भरे रोसन ॥१४॥
जैसी सोभा पसु पंखियों, सोभा तैसी भोम बीच बन ।
सो सोभा मीठी हक जिकर, यों हाल खुसाल रात दिन ॥१५॥
सोभा जाए ना कही बन पंखियों, और जिकर करत हैं जे ।
तो हक हादी रूहें मिलावा, कहूं किन बिध सोभा ए ॥१६॥
इतथें चलके जाइए, ऊपर दोऊ पुलन ।
ए खूबी मैं क्यों कहूं, जो नूरजमाल मोहोलन ॥१७॥
सात घाट कहे बीच में, माहें पसु पंखी खेलत ।
तले भोम या ऊपर, बन में केलि करत ॥१८॥

रंगमोहल पूर्व दिसा की शोभा – जमुनजी की लीला

https://nijanand.org/paramdham-charchani/

दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठ करें कई रंग ।
सुखपाल चलावें मन, ज्यों चाहिए जैसा जिन ॥१२९॥
या जमुनाजी या तलावे, आए खेलें जो मन भावें ।
श्री राज स्यामाजी के डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे[१] ॥१३०॥
जुत्थ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नए नए रंग रेलें ।
तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब ॥१३१॥
सैयां मिलकर पिउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें ।
श्री राज स्यामाजी उठकर, उतारे हैं वस्तर ॥१३२॥
पेहेने वस्तर जो झीलन, राज स्यामजी सैयां सबन ।
इत एक घड़ी लों झीलें, जल क्रीड़ा कई रंग खेलें ॥१३३॥
बाकी दिन रह्यो घड़ी एक, तामें सिनगार किए विवेक ।
हुओ संझाको अवसर, राज स्यामाजी बैठे सिनगार कर ॥१३४॥
मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजीके आगे धावें ।
उछरंगतियां आवें आगे, राज स्यामाजी के पांउ लागे ॥१३५॥
पांउ लागके पीछियां फिरें, खेल चित चाह्या त्यों करें ।
कई रंग फूले फूल बास, लेत नए नए बनके विलास ॥१३६॥

Sahoor

OR

Quiz